प्राचीन भारत में नारी शिक्षा: एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार साव
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड़

प्रस्तावना

किसी भी सभ्यता की आत्मा को समझने तथा उसकी उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता का मूल्यांकन करने का सर्वोत्तम आधार उसमें स्त्रियों की दशा का अध्ययन करना है। स्त्री की दशा किसी देश की संस्कृति का मापदंड मानी जाती है। हिंदू समाज में इसका अध्ययन निश्चित ही उसकी गरिमा को घोषित करता है। भारत की प्राचीनतम सभ्यता, सैंधव सभ्यता के धर्म में माता देवी को सर्वोच पद प्रदान किया जाना उसके समाज में उन्नत स्त्री दशा का सूचक माना जाता है। ऋग्वेदिक समाज ने नारी को आदरपूर्ण स्थान दिया। उसके धार्मिक तथा सामाजिक अधिकार पुरूषों के ही समान थे। यद्यपि कहीं-कहीं कन्या के नाम पर चिंता व्यक्त की गई है, तथापि कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जहाँ पिता विदुषी एवं योग्य कन्याओं की प्राप्ति के लिए विशेष धार्मिक अनुष्ठान करते हैं।1 वृहदारन्यकोपनिषद् में कहा गया है की जो चाहता है कि मेरी कन्या विदुषी हो और पूरे 100 वर्षों तक जीवित रहे वह और उसकी पत्नी तिल और चावल की खिचड़ी पकाकर उसमें घी मिलाकर खाए इससे वे उक्त योग्यतावाली कन्याओं को जन्म देने में समर्थ होती हैं।2

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति की है। शोध कार्य पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः प्रकाशित ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं में छपे विवरण, गजेटियर, साक्षात्कार, निबंध एवं लेख तथा विभिन्न शोध ग्रंथों को अध्ययन को आधार बनाया गया है।

तथ्य विष्लेषण:

प्राचीन धर्मग्रथों में नारी की शैक्षणिक स्थिति का वृहत रूप में चित्रण मिलता है। इसमें कोई शक नहीं कि वैदिक आर्यों के बीच नारी की स्थिति इतनी उच्च थी कि इक्कीसवीं शताब्दी में संसार का अधिक से अधिक सुसंस्कृत राष्ट्र भी नहीं कह सकता कि उसने नारी को इतना ऊँचा सम्मान एवं स्थान प्रदान किया है। समाज या कुटुंब में नारी की स्थिति का सर्वप्रथम आधार हो सकता है उनके व्यक्तित्व की ऊँचाई। स्त्रियों के अध्ययन-अध्यापन की प्रायः सुविधा रही है। परिणातमः स्त्रियाँ विदुषी होकर अध्यापिकाएँ या ऋषिकाएँ भी बनती थीं।3

शिक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य पवित्र धार्मिक वेदों तथा अन्य पवित्र ग्रंथों का अध्ययन कर जीवन का निर्माण करने के लिए तथा वास्तविक जीवन में अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का ध्यान रखते हुए मोक्ष प्राप्त करना था। स्त्रियों की शिक्षा भी इसी उद्देश्य से परिपूर्ण थी।4

वैदिक काल में माता-पिता का मुख्य कर्तव्य था पुत्र एवं पुत्रियों, दोनों को शिक्षित करना। दोनों का उपनयन संस्कार समान रूप से किया जाता था। वैदिक काल की कुछ विदुषी नारियों की चर्चा वैदिक संहिताओं में मिलती है, जिन्होंने कई वैदिक ऋचाओं की रचना की। ऋग्वेद के कई सूक्तों के कई मंत्रों की रचनाकार तत्कालीन विदुषी महिलाएँ ही थी। ज्ञात होता है कि लोपामुद्रा, विश्वारा, सिकता, निवावरी और घोषा ने ऋग्वेद के क्रमशः प्रथम मंडल के एक सौ उनासीवें सूक्त, नवम मंडल का ग्यारह से बीस तथा इक्यासी एवं दशम मंडल का उनचालीसवाँ, एवं चालीसवाँ सूक्त की रचनाकार थी। ऋग्वेद के दशम मंडल का एक सौ पैतालीस एवं एक सौ उनसठवाँ श्लोक की लेखिका इंद्राणी एवं साँची थी। ज्ञात होता है

कि अपाला (अत्रि ऋषि की पुत्री) ने ऋग्वेद के आठवे मंडल के नब्बेवाँ सूक्त का एक से सात तक की ऋचाओं की रचना की। इसमें इंद्र की स्तुति की गई है। इसी प्रकार लोप मुद्रा के बनाए गए सूक्त में कामशास्त्र की अत्यंत उच्च कोटि की बातें भी हैं। इसी प्रकार रोमशा (बृहस्पति जी की पुत्री) ने सात वैदिक ऋचाओं का संकलन किया। प्रथम मंडल के 126 वें सूक्त के छठे एवं सातवें मंत्रों को बनाने वाली विदुषी रोमशा ही थी। सुर्पुराज्ञी दशम मंडल के एक सौ नवासीवाँ सूक्त की कवयित्री थी। ममता जो दीर्घतमा ऋषि की माता थी ने दशम मंडल के दशम सूक्त के द्वितीय मंत्र की रचना की। इनके द्वारा रचित स्तुति पाठ ऋग्वेद संहिता के प्रथम मंडल के दशम सूक्त की ऋचा में है। उर्वशी ने इसी मंडल के पंद्रहवें सूक्त के दूसरे पाँचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें, पंद्रहवें, सोलहवें, अठारहवें मंत्र की रचना की। शश्वती जो राजा असंग की पत्नी थी ने ऋग्वेद के आठवें मंडल के प्रथम सूक्त की चौतीसवीं ऋचा का संकलन किया। अंगिरा ऋषि की कन्या मुदगलानी ने दशम मंडल के एक सौ दो सूक्त के दूसरे मंत्र की रचना की।6

प्राचीन भारत में दो प्रकार की शिक्षित नारियाँ थीं। एक ब्रह्मवादिनी और दूसरी सद्यो दशहा। पहली प्रकार की छात्राएँ आजीवन नीति शास्त्र, धर्म एवं दर्शन शास्त्र की छात्राएँ रहती थी।7 ब्रह्मवादिनी स्त्री आजीवन विवाह नहीं करती थी तथा वे आजीवन शिक्षा ग्रहण करती थीं। कृशध्वज ऋषि की कन्या वेदवती इसका उदाहरण है। इस प्रकार का ब्रह्मचर्य जीवन स्त्रियाँ बहुत कम ही व्यतीत करती थीं। दूसरी सद्योदशहा, जो विवाह के पूर्व तक यानी 15-16 वर्षों तक वे शिक्षा प्राप्त करती थी और इस दौरान वैदिक ऋचाओं को कंठस्थ करती थी। प्रार्थना के साथ-साथ कुछ धार्मिक संस्कारों को संपन्न करती थीं। इसके बाद उनका विवाह हो जाता था।8 वैदिक काल में कन्या को पुत्र जैसा ही शैक्षणिक अधिकार एवं सुविधाएँ प्रदान की गई थी। कन्याओं का भी उपनयन संस्कार होता था। पर बाद के काल में उनके उपनयन संस्कार पर रोक लगा दी गई।9 स्मृतिकार मनु ने स्त्रियों का उपनयन संस्कार विवाह विधि को बताया तथा कहा कि स्त्रियों लिए पति की सेवा ही गुरूकुल का वास है और घर का काम-धंधा ही नित्य का हवन होता है।10 इसके पीछे यह धारणा काम करती है कि वे स्वतंत्र न हो बाहर की दुनिया न देखें तथा उनकी सोच हमेशा पुरूषों के अधीन रहें। उनको यह सिखाया जाता था कि महिलाओं का कर्तव्य है कि वे दूसरों के लिए अपना जीवन अर्पण कर दें, पूर्ण आत्म त्याग करें और अपने स्नेह संबंधों के सिवा उनका अपना कोई जीवन न हो और अंतिम मानव इच्छा की जो मुख्य वस्तुएँ हैं, समान एवं सामाजिक महत्वाकांक्षा की सभी चीजें, सामान्यतः एक स्त्री पति के जरिए ही पाती है या पाने की कोशिश करती है। इन सब चीजों से यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं की बुद्धि पर साधनों के इस महान प्रभाव को हासिल कर पुरूषों के स्वार्थी स्वभाव ने इसका पूरा-पूरा प्रयोग महिलाओं को अधीन रखने के लिए भी किया।11

हालांकि इसके बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में नारियों की संख्या दिखाई पड़ती है। उपनिषद्कालीन विदुषी नारियों में गार्गी का नाम प्रमुख है जिसने राजा जनक की सभा में याज्ञवल्क्य के साथ संवाद क्रिया वृहदारण्यकोपनिषद से गार्गी के बारे में पता चलता है कि याज्ञवल्क्य के साथ जब उसने पृथ्वी से लेकर आकाश पर्यंत सभी चीजों के बारे में क्रमशः प्रश्न करना शुरू किया तो वे काफ़ी क्रोधित हो उठे तथा कहा कि हे गार्गी, अगर तुझे मरने की इच्छा न हो तो अति प्रश्न मत करो। कहीं तेरा मस्तक न गिर जाए?12

इसके अलावा अन्य ब्रम्हवादिनी महिलाएँ थीं जिनमें वेदवती जो कृषध्वज ऋषि की कन्या थी, ने भी मीमांसा जैसे गूढ़ विषय पर एक अत्यधिक बहुचर्चित पुस्तक की रचना की।13

इसके अतिरिक्त प्राचीन काल में कई विदुषी स्त्रियों की चर्चा साहित्यों में मिलती है। राजशेखर जो दसवीं सदीं का एक कवि था, कि पत्नी एक उच्च कोटि की साहित्य लेखिका थी। मुरूला मोरिका एवं सुभद्रा संस्कृत साहित्य की प्रमुख कवयित्री थी। इसी प्रकार शंकराचार्य एवं मंडन मिश्र के विवाद में भरती की मध्यस्थता इस तथ्य को उजागर करती है कि प्राचीनकाल में ज्ञान एवं दर्शन के क्षेत्र में नारियां सक्रिय भूमिका निभाती थी। बेसक महिलाएँ साहित्य, कला, दर्षन, धर्मशास्त्र में पारंगत होने के साथ-साथ चिकित्सा षास्त्र, युद्धकला में भी पारंगत थी।14

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में खासकर वैदिक काल में नारियों को समाज में अत्यधिक सम्मान प्राप्त था। वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में अधिपत्य स्थापित किया था। हालांकि वैदिककोत्तर काल में नारी शिक्षा में क्षरण दिखाई पड़ता है, क्योंकि अब पूर्व की अपेक्षा बाल-विवाह पर बल दिया गया, जिससे स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया फिर भी सामान्य शिक्षा प्राप्त करने का उन्हें अधिकार था एवं उच्च वर्गों की स्त्रियां अभी भी ज्ञान एवं दर्षन के क्षेत्र में दक्ष थी।

संदर्भ साहित्य:-

1. के. सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2003, पृष्ट 193-194
2. वृहदारन्यकोपनिष्द, सानुवाद, शंकर भाष्य सहित, गीता प्रेस गोरखपुर तेरहवाँ संस्करण, अध्याय-छय, श्लोक- 17
3. जयशंकर मिश्रा, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1983, पृष्ठ- 499
4. राम बिहारी सिंह तोमर, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्थाएं, श्री राम मोहन एंड कंपनी लि0, आगरा, 1970, पृष्ठ- 440
5. ए. एस. अल्टेकर, द पोजिशन ऑफ विमेन इन हिंदू, सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिसर्स प्राइवेट लि., दिल्ली, 2005, पृष्ठ- 9-10
6. सुधा गोस्वामी, भारतवर्ष की चर्चित महिलाएँ, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ- 14-16
7. डी. के. शरण, प्राचीन भारत में नारी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ- 20
8. श्री कृष्ण ओझा, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, रिसर्च प्रकाशन, 1978, पृष्ठ- 118
9. के. सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2003, पृष्ट 194
10. गणेशदत्त पाठक, मनुस्मृति, श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार, वाराणसी, 2002, अध्याय- दो, ष्लोक- 67
11. जॉन स्टुअर्ट मिल, स्त्रियों की पराधीनता, राजकल प्रकाशन, 2009, के. सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2003, पृष्ट 46-47
12. गीता ओझा, पोजिशन ऑफ विमेन इन ऐज डिपेक्टेड इन ब्राहमिनिकल लिटेरेचर विथ स्पेशल रिफरेश टू सती, जनरल ऑफ स्टोरिकल रिसर्च भोलयुम- ग्स्टप्प् ;छवे.1.2द्ध ग्स्टप्प्;छवे.1.2द्ध 2004ण्2006, पृष्ट 48
13. सुधा गोस्वामी, भारतवर्ष की चर्चित महिलाएँ, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ- 14-16
14. ए. एस. अल्टेकर, द पोजिशन ऑफ विमेन इन हिंदू, सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिसर्स प्राइवेट लि., दिल्ली, 2005, पृष्ठ- 11-12